UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 06 | July - September 2017

शेखावाटी में धार्मिक पर्यटन : एक विश्लेषण

डॉ.योगेश कुमार सबल,
व्याख्याता (भूगोल), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिमनपुरा (जयपुर)

प्रस्तावना :–

हमारे देश में घरेलू पर्यटन प्रमुख रूप से धार्मिक पर्यटन है। घरेलू पयर्टकों में 90 प्रतिशत भागीदारी धार्मिक पर्यटकों (तीर्थ यात्रियों) की होती है। हमारे देश में घरेलू पर्यटन को राष्ट्रीय पर्यटन का नाम दिया गया है, प्रारंभिक युग में इसे देशाटन भी कहा जाता था। श्री राजीव गांधी ने कहा था, कि राष्ट्रीय पर्यटन हमारे विकास का वह हिस्सा है जो राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। यह विभिन्न संस्कृतियों, धर्म, समुदायों एवंसमूहों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देता है। भारतीय घरेलू पर्यटन प्राचीन समय से ही एक प्रमुख प्रघटना के रूप में रहा है। प्रारंभिक काल में धार्मिक व व्यापार के उद्देश्य से लोग इस प्रकार की लम्बी दूरी व दूरवर्ती क्षेत्रों की यात्राएं करते थे। समय के साथ –साथ आमोद प्रमोद, शिक्षा, मनोरंजन, साहस भी यात्राओं के उद्देश्य बनने लगे। यह व्यक्ति जो 24 घण्टे से अधिक लेकिन छः माह से कम अपने निवास स्थान से बाहर किसी अन्यत्र स्थान पर स्थित होटल या अन्य प्रकार के व्यापारिक रूप से चलाये जा रहे आवासों जैसे– मुसाफिरखाना, धर्मशाला, सराय, अतिथि भवन में ठहरता है, तो वह घरेलू पर्यटक कहलाता है।

शेखावाटी का धर्म सदैव से ही मानव धर्म रहा है। यहाँ सभी धर्मों के लोग रहते आये हैं। यहाँ की संस्कृति में त्याग, बलिदान, धर्म, सहिष्णुता, कष्ट काटने की क्षमता आदि असाधारण बातें हैं। यहाँ के मेले, व्रत, धार्मिक मान्यताएं, विश्वास, जीवन निर्वाह विधान, लोक मान्यताएं, देव पूजा, उत्सव, पर्व और तीर्थ स्थल आदि इस इलाके के सांस्कृतिक स्वरूप का दर्शन कराते हैं। शेखावाटी के धार्मिक स्थलों में लोहार्गल, शाकंभरी, जीणमाता, हर्षनाथ भैरव, खाटूश्यामजी, गणेश्वर, सालासर हनुमान, रैवासा के जैन मंदिर, झुंझुनूं का जैन मंदिर, नरहड़ पीर तथा कमरूद्दीन शाह की दरगाह प्रमुख हैं।

कुंजी षब्द–षेखावाटी, षाकम्श्री, नरहड दरगाह, रैवासा, लोहार्गल, खाटूश्यामजी आदि

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र ''शेखावाटी प्रदेश'' का इतिहासकारों ने जो सीमांकन किया है, उसमें सीकर तथा झुंझुनूं दो ही जिलों को सम्मिलित किया जाता है। राव शेखाजी व उनके वंशजों द्वारा शासित प्रदेश शेखावाटी कहलाता है। अंग्रेज अधिकारी मेजर फोरेस्टर के नेतृत्व में गठित शेखावाटी ब्रिगेड के अधिकार क्षेत्र में सीकर, झुंझुनूं जिले ही परिगणित किये जाते थे। शेखावाटी के अन्तर्गत अमसरवाटी, झुंझुनूंवाटी, सीकरवाटी, फतेहपुरवाटी, खण्डेलावाटी आदि भाग आते है। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से इनकी सीमाऐं सीकर और झुंझुनूं दो ही जिलों तक सीमित रही है।

विधितंत्र–

अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में धार्मिक पर्यटन के विश्लेषण हेतु डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हेण्डबुक्स, मेला निर्देशिका, जयंती वार्षिक नवरात्र, विभिन्न पत्र–पत्रिकाऐं तथा साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडो का संकलन कर सारणियों द्वारा विश्लेषण किया गया हैं।

परिकल्पनाऐं–

(1) अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न धार्मिक स्थलों, मेलों तथा सामाजिक– सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

(2) धार्मिक पर्यटन का स्थलवार, समयानुसार (त्रत्विक) विश्लेषण करना।

साहित्य का पुनरावलोकन–

यद्यपि तीर्थ स्थलों का पर्यटन कोई नवीन प्रवृति नहीं है, यह प्राचीन वैश्विक परंपरा रही है तथापि इस विषय पर शोध कार्य भी बहुत कम हुए हैं, जबकि राज्य स्तर पर तो न के बराबर है। आर्य, हरफूल सिंह (1987) ने अपनी पुस्तक शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान में शेखावाटी शब्द के उद्‌भव , शेखावाटी के ठिकानों की प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक –धार्मिक तथा आर्थिक व्यवस्था, रीति –रिवाज उत्सव, त्योहार आदि का विस्तृत विवेचन किया है। मिर्जा, जीनथ (2002) के शोध प्रबंध–ष्उचंबज व ज्वनतपेउ वद म्दअपतवदउमदजरू । ब्ंेम `जनकल व ।रउमत कपेजतपबजष मे पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारकों में भोजन, आवास, होटल सुविधा तथा सरकारी सुविधओ जैसे– सर्किट हाउस, डाक बंगले ,आरटीडीसी आदि को प्रमुख माना है।ॅउचेवद बेंतसपम (2011) ने अपनी पुस्तक ष्मसपहपवने ज्वनतपेउष मे धार्मिक पर्यटन को विश्व का सबसे बढ़ता हुआ अवकाश उद्योग तथा मक्का की वार्षिक हज यात्रा को विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक पर्यटन यात्रा का रूप बताया है। बंसल, सुरेश चंद्र (2011) की पुस्तक ष्पर्यटन सिद्धांत एवं यात्रा प्रबंध में पर्यटन के प्रकारों यथा– मरुस्थलीय पर्यटन, समुद्री पर्यटन, धार्मिक अथवा तीर्थ पर्यटन, साहसिक पर्यटन आदि को बताते हुए पर्यटन को बढ़ावा व्देने वाले विभिन्न प्रेरकों ट्रैवल एजेंसी, रेलवे, नागर विमानन, टूर पैकेजिंग, पर्यटन संस्थाएं, पर्यटन नीतियां, सूचना तकनीकी, विज्ञापन, उद्यमिता, विपणन आदि संस्थाओं की उपयोगिता का विवेचन किया है। अग्रवाल, विनोद (2011) ने अपनी पुस्तक ष्ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन में बताया है कि भारत एक ऐतिहासिक देश है, जिसमें ऐतिहासिक अवशेष यथा –आध्यात्मिक स्थल, मठ, मंदिर आदि देखने को मिलते हैं, जिनमें तत्कालीन समाज की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है।

शेखावाटी के महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल

प्रमुख धार्मिक स्थल	जगह
हर्षनाथ भैरव मंदिर	हर्ष गिरी
जीणमाता	जयंती देवी शक्तिपीठ दांतारामगढ़– सीकर
शाकंभरी	सीकर
खाटूश्यामजी	दांतारामगढ़ (तहसील) सीकर
गणेश्वर	नीमकाथाना, सीकर
रैवासा धाम	दांतारामगढ़, सीकर
त्रिवेणी धाम	अजीतगढ़, सीकर
दो जांटी बालाजी	फतेहपुर, सीकर
गोपीनाथ, जानकी नाथ मंदिर	सीकर
लोहार्गल	उदयपुरवाटी, झुंझुनूं
किरोड़ी	उदयपुरवाटी
माँ सरस्वती मंदिर	पिलानी

राणीसती मंदिर	झुंझुनूं
कमरुद्दीन शाह की दरगाह	झुंझुनूं
नरहड़ की दरगाह	चिड़ावा, झुंझुनूं
बाबा रामदेव मंदिर	नवलगढ़, झुंझुनूं
बाबा रामेश्वर जी का मंदिर	टिबाबेसई, खेतड़ी, झुंझुनूं
शक्तिपीठ मनसा माता	खेतड़ी व हर्ष पर्वत के मध्य –झुंझुनूं

इन धार्मिक स्थानों पर वर्ष भर में भारी संख्या में लोग आते हैं। भजन, कीर्तन, रात्री जागरण में प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग भाग लेते हैं। संस्कार युक्त होने के कारण स्त्रियाँ इनकी जात बोलती है और लाभ होने पर इन तीर्थों की यात्राएं करती है। नरहड़ के पीर की दरगाह अजमेर के ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के बाद दूसरे स्थान पर मान्यता है। यहाँ हिन्दू, मुस्लमान, जैन, सिक्ख और दूसरे धर्मावलम्बी, जायरीन हजारों की संख्या में प्रतिवर्ष आते हैं। यह एकता का प्रतीक है। यह अति प्राचीन स्थान माना जाता है। यहाँ प्राप्त मूर्तियां तीन हजार वर्ष पुरानी बतायी जाती है। यहाँ हर शुक्रवार जायरीन आते हैं। यह ऐतिहासिक स्थान है जो जनश्रुति के अनुसार यह कभी पाण्ड़वों की राजधानी रहा था। नवाबी युग में नरहड में नवाबी थी ।

रैवासा व झुंझुनूं के जैन मंदिर मे भी अन्य धर्मावलम्बी आते हैं प्राचीन काल में स्थापित इन मंदिरों को शेखावत काल में सम्बल मिला। **लोहार्गल**,**जीणमाता, खाटूश्यामजी**, **सालासर बालाजी** आदि सभी यद्यपि हिन्दू धार्मिक स्थल है. लेकिन ऐसी कोई जाति या धर्म नहीं जिनके भक्त अपनी मण्डली के साथ यहाँ नहीं पहुँचते ।सीकर से 60 किमी. दूर उदयपुरवाटी के पास **शाकम्भरी** शक्तिपीठ है, जो शेखावाटी की प्राचीन धार्मिक नैसर्गिक सौंदर्य स्थली है। वि.स. 749 के तीन शिलालेख उपलब्ध है जिनके अनुसार चौहान राजा दुर्लभराज के भतीजे सिद्धराज ने शकदेवी (शाकंभरी) का मण्डप बनवाया था। यहाँ दूर–दूर से लोग अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करने हेतु देवी के दर्शन करने को आते हैं।

सीकर से लगभग 16 किमी. दूर तथा जयपुर सीकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित गौरियां गाँव से 10 किमी. दूर **जीणमाता** का भव्य मंदिर है, यह मंदिर शेखावतों शासकों के लिए इष्ट देवी के रूप में मान्य रहा है। यह मंदिर 10वीं शताब्दी का बना हुआ है। यही राव शेखा ने खेजड़े के पेड़ के नीचे अपने प्राण त्यागे थे। यहाँ देवी की अष्ट भुजा वाली प्रतिमा है। इस मंदिर की बहुत अधिक मान्यता है। अधिकतर कार्यक्रमों में बच्चों के जडूले, जात देने सम्बन्धी कार्य होते हैं। प्रतिवर्ष चौत्र एवं आश्विन के नवरात्रों में मेले लगते हैं, सवामणियां की जाती है। यहाँ छत्र, झारी, नोबते, कलश भेंट स्वरूप चढाये जाते है।

शेखावाटी के धार्मिक स्थलों पर कुल तीर्थयात्रियों का वितरण

क्र.सं.	धार्मिक स्थल	तीर्थयात्री (लाखों में)	प्रतिशत
1	खाटूश्यामजी	45.00	68.28
2	जीणमाता	6.00	9.10
3	रामदेवजी	3.00	4.55
4	लोहार्गल	5.50	8.34
5	राणीसती	1.40	2.12

6	नरहड़ दरगाह	5.00	7.58
	कुल	65.9	100

स्त्रोत–सर्वेक्षण पर आधारित, 2012–13

इसी प्रकार झुंझुनूं में श्री कल्याणजी का मंदिर सबसे पुराना है, जो हिन्दू शैली पर आधारित है। 18वीं सदी में शार्दूल सिंह के समय इसका जीर्णोद्धार हुआ था। झुंझुनूं राणी सती का मंदिर शेखावत काल से पूर्व का है। इसका वर्णन संवत् 1800 के कागजात में है, जो कि शार्दुलसिंह द्वारा किये गये राज्य के बंटवारे से और गाँवों के विभाजन से सम्बन्धित है, मिलता है। यह 1.5 किमी. क्षेत्र में फैला यह मंदिर राजस्थानी शिल्पकला का बेजोड़ उदाहरण है। जिसमें 247 कमरे बने हुये हैं। अब यह संख्या 1000 कमरों तक पहुँच गयी है। जिसमें आयुर्वेद चिकित्सालय तथा विद्यालय की सुविधा भी है।

अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी के इस प्रकार प्राचीन मंदिरों में रींगस से 16 किमी. दूर खाटू ग्राम में श्याम बाबा का पवित्र धाम है। यह मंदिर वि.स. 1777 में निर्मित हुआ । फाल्गुन में विशाल मेला लगता है। जिसमें लगभग 10 लाख लोग दर्शन हेतु आते हैं। आज यह संख्या सालभर में 45 लाख दर्शनार्थियों के लगभग पहुँच गयी है।

धार्मिक एकता, भावात्मक एकता एवं सहिष्णुता का प्रतीक, बाघेश्वर का तीर्थ खेतड़ी के निकट जसरापुर से तीन कोस की दूरी पर दो पहाड़ों की संकरी घाटी में स्थित है। यहाँ एक प्रवाहमान जल स्त्रोत है जो मंद धाराओं में एक पहाड़ी की खोह में से निकलकर नीचे गिरता है। यहाँ चौहान काल का मंदिर है। जिसके नष्ट होने के बाद मरम्मत करवा कर ठीक बना दिया गया। खेतड़ी घराना भी यदा कदा 1950 तक इसकी मरम्मत करता रहाँ यहाँ यात्री विशेष तो नहीं आते, लेकिन प्राचीन महत्त्व का मंदिर है। किंवदन्ती के अनुसार भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप का हृदय विदीर्ण करके अपने रक्त लिप्त नखों को यही पर धोया था। इस प्रकार आस–पास के धार्मिक आस्था वाले लोग यहाँ आते रहते हैं।

शेखावाटी में हनुमान जी की बहुत मान्यता है। शायद ही ऐसा स्थान होगा जहाँ हनुमान जी या बालाजी का देवरा न हो, जहाँ भी कुंआ स्थित है वहाँ ये अवश्य ही मिलते हैं। शेखावाटी के इन प्रमुख मंदिरों में सालासर बालाजी, फतेहपुर का दो जांटी बालाजी, चूरू के तालवाले बालाजी, घाटा मेंहदीपुर वाले बालाजी और ईच्छापूर्ण बालाजी प्रमुख है। हनुमान जी मुख्यतः किसानों के इष्ट देव हैं। इन्हें पाताल का राजा कहते हैं। यहाँ जातिगत भेदभाव नहीं मानी जाती अर्थात् सभी समाज यहाँ चाहे राजा हो या रंक हो यात्री की से जाते थे।

अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी की मस्जिदें भी महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें ज्यादातर चार मीनारों वाली कुछ आठ तथा एक मीनार वाली भी है। 1836 में झुंझुनूं में हेनरी फारेस्टर ने एक मस्जिद बनवायी थी, जो आज जामा मस्जिद के नाम से जानी जाती है। इसी प्रकार सिंघाना की मस्जिद भी 300 वर्ष पुरानी है। खण्डेला के पास अकबरी मस्जिद में अकबर ने पड़ाव दिया था इसे उसी समय की बनी हुयी मानी जाती है।श्शेखावत काल की दरगाहों में भी हिन्दू धर्म का प्रभाव लक्षित होता है, ये किसी सन्त धीर की यादगार में बनायी गयी है। इनमें नरहड़, सिंघाना, फतेहपुर, सीकर, झुंझुनूं, केड, बगड आदि नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसमें नरहड़ में बनी हाजिब शक्करवार की दरगाह करीब 500 वर्ष पुरानी मानी जाती है। इस्लामपुर व केड की दरगाह 400 वर्ष पुरानी मानी जाती है। शक्करवार के दरगाह में लाखों लोग जियारत करने आते हैं। यहाँ जात जडूलों के साथ ही विभिन्न मानसिक व शारीरिक व्याधियों वाले रोगी अपने उपचार हेतु आते हैं।

लोहार्गल में खाखी जी का मंदिर, वराह मंदिर, सूर्यमंदिर एवं सूर्यकुण्ड, मालकेतु, वनखण्डी आदि मुख्य है। सीकर से 14 किमी. दूर हर्ष पर्वत पर अनेक मंदिर बने हुये हैं, इनमें शिव मंदिर अति प्रसिद्ध है। मंदिर के कलात्मक द्वार स्तंभ स्थापत्य कला के बेजोड़ उदाहरण हैं। इनके अलावा भगवान विष्णु, देवी सरस्वती और दुर्गा की प्रतिमाएं हैं। इस मंदिर का निर्माण सन् 961 ई. से आरंभ होकर सन् 973 में पूर्ण हुआ। यही पर सीकर नरेश राजा शिव सिंह का बनाया हुआ शिव मंदिर है। जिसमें बड़े आकार का शिवलिंग है।

शेखावाटी के धार्मिक स्थलों खाटूश्यामजी जीणमाता, सालासर बालाजी पर्यटन की दृष्टि में धार्मिक त्रिकोण के रूप में जाना जाने लगा है। क्योंकि शेखावाटी मूल के लोग जो बाहर अन्य जिलों, राज्यों, देशों से आते हैं तो खाटूश्यामजी जाने वाले जीणमाता तथा सालासर अवश्य जाते हैं। सालासर जाने वाले मार्ग में स्थित विभिन्न तीर्थस्थलों पर यात्री अवश्य आते हैं इनमें खाटूश्यामजी जीणमाता आदि मुख्य है। शेखावाटी के अन्य स्थलों शांकभरी, राणीसती, रामदेवजी नवलगढ़, लोहार्गल आने वाले इस धार्मिक त्रिकोण वाले स्थलों का अवश्य ही आकर दर्शन लाभ लेते हैं।

राजस्थान का इतिहास वीरता, शौर्य और पराक्रम का इतिहास है। अतः वीर चरित्र को प्रेरणा देने वाली शक्ति की आराधना राजस्थानी संस्कृति का अभिन्न अंग है। राजस्थान में शक्ति पूजा की प्राचीन परम्परा की परिचायक पकी हुई मिट्टी की वे देवी प्रतिमायें जो हनुमानगढ़ के आस पास भद्रकाली रंगमहल तथा लुप्त सरस्वती नदी क्षेत्र से प्राप्त हुयी है। टोंक जिले के उणियारा कस्बे के निकट नगर से महर्षिमर्दिनी की एक प्रतिमा मिली है, जिसका समय प्रथम शताब्दी के लगभग माना गया है।

शेखावाटी में जीणमाता तथा सकराय माता (शंकरा) के प्राचीन मंदिर इस क्षेत्र में शक्तिपूजा की लोकप्रियता के परिचायक है, सकराय माता के मंदिर से उपलब्ध एकशिलालेख में चौहान नरेश दुर्लभराज के शासनकाल में देवी के मण्डप निर्माण का उल्लेख है। निरन्तर युद्धों और संघर्षो के उस काल में शक्ति की उपासना राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग रही है। यही कारण है कि स्वतंत्रता से पहले राजस्थान के विभिन्न भागों पर शासन करने वाले राजवंशों की अपनी–अपनी कुलदेवी रही है, इस आशय का यह दोहा लोक में बहुत प्रसिद्ध है।

आवड़ तूठी भाटियां, कामेही गौडाह ।
श्री बरवड़ सिसोदिया, करनल राठौडाह ।।

अर्थात् भाटियों पर आवडमाता, गौडों पर कामेही, सिसोदियों पर बरवड़ तथा राठौडों पर करणीमाता सदा कृपालु रही है। इसी भांति अन्य राजवंशों की कुलदेवियों में चौहानों की इष्ट देवी आसापुरी, कछवाहों की जमवायमाता और शिलादेवी तथा करौली के यादव वंश की आराध्य कैलादेवी प्रमुख एवं उल्लेखनीय है ।

वर्तमान स्थिति–

विश्व में जहाँ पर्यटन स्थलों तथा पर्यटकों की संख्या दोनों में वृद्धि हुयी है, उसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी के धार्मिक स्थलों में तथा पर्यटकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जहाँ 90 के दशक में हजारों यात्री आते थे, आज लाखों की संख्या में आने लगे है, जिससे आधारिक संरचना भी पहले की अपेक्षा विकसित हुई है।

UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 06 | July - September 2017

शेखावाटी के धार्मिक स्थलों पर तीर्थयात्रियों का प्रवाह (देश में) (प्रतिशत में)

क्र.सं.	राज्य	धार्मिक स्थल					
		खाटूश्यामजी	जीणमाता	राणीसती	नरहड़	लोहार्गल	रामदेवजी
1	राजस्थान	55	60	20	55	91.33	87.50
2	हरियाणा	15	12	3	25	5.33	0.60
3	दिल्ली	10	8	15	10	1.33	4.35
4	प. बंगाल	7	7	22	—	—	2.00
5	महाराष्ट्र	5	3	18	—	—	—
6	पंजाब	4	5	7	5	2	2.50
7	अन्य राज्य	4	5	15	5	—	3.05

स्त्रोत–सर्वेक्षण पर आधारित, 2012–13

तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक स्थानीय पर्यटक लोहार्गल तथा रामदेवजी स्थल पर आते हैं, जबकि अन्य राज्यों से सर्वाधिक पर्यटक राणीसती स्थल पर आते हैं। इसका कारण यह है कि राणीसती स्थल पर सतीनिवारण अधिनियम 1987 के तहत पूजा पाठ और सती महिमा पर प्रतिबंध है।

शेखावाटी में सर्वाधिक तीर्थ–यात्री खाटूश्यामजी स्थल पर आते हैं, जिसका अनुसरण, जीणमाता, लोहार्गल, नरहड़ दरगाह ने किया है, जबकि सबसे कम राणीसती स्थल पर आते है, क्योंकि सती निवारण अधिनियम 1987 के तहत क्षेत्राधिकार में चूड़ी, चुनड़ी, पौशाक चढ़ाना, सती गौरवान्वय के नारे, जयकारे, कैसेट, साहित्य तथा माईक से प्रचार करना प्रतिबंधित है, लेकिन मान्यता स्वरुप लोगों का आवागमन रहता है तथा जिससे स्थल का काफी लोगों से जुड़ाव है। अध्ययन क्षेत्र में स्थित होने के कारण इसको प्रस्तुत शोधकार्य में सम्मिलित किया हैं।सर्वाधिक धार्मिक तीर्थयात्री जयपुर, सीकर, झुंझुनूं जिलों से आते है, जिनमें ठहरने वाले कम होते हैं, ये मुख्य रुप से मेले अथवा उत्सवों पर ही ठहरते हैं, जबकि सबसे कम राजस्थान के हाड़ौती तथा मेवाड़ क्षेत्र से आते हैं। मेवाड़ क्षेत्र से आने वाले यात्री केदारनाथ, बद्रीनाथ स्थलों के दर्शन करने आते हैं, तब ठहरते हैं। ये अधिकतर खाटूश्यामजी, जीणमाता, सालासर आदि पर ही ठहरते हैं।

निष्कर्ष :–

अध्ययन क्षेत्र शेखावाटी में होने वाले धार्मिक पर्यटन मुख्यतया सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधारित है। भारत के पर्यटन में 90ः भागीदारी घरेलू पर्यटन की है तथा इस घरेलू पर्यटन का 90ः भाग धार्मिक पर्यटन का होता है। अध्ययन क्षेत्र में स्थित प्रमुख धार्मिक स्थलों पर क्षेत्रवासी अन्य प्रान्तों से विभिन्न सामाजिक– सांस्कृतिक कार्यक्रमों यथा– जात– जडूले, शादी–विवाह की जात, मुण्डन संस्कार, रात्री जागरण, कुलदेवता की रस्में, कुछ स्थलों पर पुण्य लाभ कमाने, कुछ पर पुनर्जन्म से मुक्ति तो कुछ स्थलों पर रोग, व्याधियों को दूर करने, कष्ट निवारण हेतु यात्राऐं करते हैं। इन सभी प्रकार की गतिविधियों के कारण क्षेत्र में कई आधारभूत संरचनाओं का विकास हुआ है कि जिनमें आवास, धर्मशालाऐं, हॉटल्स एवं रेस्टोरेंट , यातायात एवं परिवहन, संचार, एवं

सड़क आदि व्यवस्थाओं का विकास हुआ है , इन व्यवस्थाओं से उद्योगों, सहायक उद्योगों को बल मिलने से रोजगार में सहायक सिद्ध हुये है, साथ ही सांस्कृतिक धरोहरों को सरक्षण प्राप्त हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. बंसल, सुरेश चन्द्र, 2011 – पर्यटन सिद्धान्त एवं यात्रा प्रबन्ध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
2. आर्य, हरफूल सिंह, 1987 – शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
3. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, 2008 – सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय, जयपुर।
4. नवलगढ़िया, आत्माराम, 2012 – सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षा एवं संरक्षण, शेखावाटी अंचल संस्थान।
5. श्याम दर्शन, मेला निर्देशिक, 2012 – वार्षिक फाल्गुन मेला, खाटूश्यामजी, जिला प्रशासन, सीकर।
6. जयन्ती, वार्षिक चैत्र नवरात्र, 2011 – जीणमाता, जिला प्रशासन, सीकर।
7. दैनिक उद्योग आस पास ,2010 – पधारो म्हारे जीणधाम, आश्विन मेला विशेषांक,14 अक्टूबर, 2010।
8. शिलालेखा, 2012 – जीणमाता मंदिर, सीकर।
9. जिला दर्शन, दिसम्बर 2012 – जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, झुंझुनूं
10. वर्मा, मदनलाल, 2001 – शेखावाटी अंचल, शेखावाटी अंचल संस्थान, जयपुर।
11. शर्मा, सुभाष, 2008 – शेखावाटी प्रदेश का संस्कृत साहित्य को योगदान, राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।
12. सबल, योगेष कुमार 2014 – शेखावाटी प्रदेश के विकास मे धार्मिक स्थलों की भूमिका। चैण्क थिसिस, भूगोल विभाग राजस्थान विष्वविद्यालय, जयपुर।